अध्याय - 3

त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य-वस्तु परीक्षण

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

अध्याय – 3

त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य – वस्तु परीक्षण

छायावाद के बाद वाली पीढ़ी के कवियों में त्रिलोचन शास्त्री का महत्वपूर्ण स्थान है । प्रगतिवाद काव्य – धारा के कुछ चुने हुये कवियों में उनका नाम निःसंकोच लिया जा सकता है । त्रिलोचन प्रगतिवादी धारा के सशक्त हस्ताक्षर हैं । शास्त्री जी निराला के बाद और उन्हीं की परम्परा में आने वाले बहुत ही समर्थ कवि हैं ।

त्रिलोचन की कविताओं में एक ओर सादगी विद्यमान है, तो दूसरी ओर अपनी मिट्टी की सोंधी – सोंधी गन्ध भी है । उनकी कविता कहीं भी अपने औसत धरातल से नीचे नहीं उतरी है । इनकी कविता आकार में छोटी है, परन्तु प्रभाव में तीव्र है। जैसा कि हम अन्यत्र देख चुके हैं, त्रिलोचन ने व्यवहारिक जीवन में स्वयं बहुत संघर्ष किया है, इसलिए उनकी कविताओं में दैन्य अभाव और संघर्ष का यथार्थ चित्रण हुआ है । इनकी कविताएं संघर्षजन, अटूट विजय–भाव और शक्ति से परिपूर्ण हैं । त्रिलोचन की कविता एक ठेठ – भारतीय जन की कविता है । कवि ने अपनी कविताओं में स्वानुभूत जीवन रूपायित किया है । कवि ने मानव के रागात्मक पक्ष का बराबर ध्यान रखा है, पर कहीं – कहीं उनकी कविता बौद्धिकता के आधिक्य के कारण रूखी और वेगहीन भी हो गयी है ।

त्रिलोचन शास्त्री ने अपनी कविताओं में चतुर्दशपदी (सॉनेट) काव्य रूप का सबसे अधिक प्रयोग किया है । उन्होंने इस दिशा में सर्वाधिक सफल यात्राएं की हैं । सॉनेट में जैसे कवि त्रिलोचन के प्राण ही बसते हैं । उसी की बरकत जैसे त्रिलोचन का कवि जीवित रहेगा । त्रिलोचन सॉनेट के पहले समर्थ कवि हैं । शायद ही कोई ऐसा कवि होगा, जिसका कोई छंद या काव्य रूप उनका पर्याय बना हो । सॉनेट में त्रिलोचन ने अधिकांश उपलब्ध काव्य – रूपों का प्रयोग किया है । पैट्रार्कीय सॉनेट भी उन्होंने लिखे और शेक्सपीयर – सारिणी के सॉनेट भी, बल्कि उनमें कहीं – कहीं इन्होंने स्पेन्सर और सरे – दोनों की तुक योजनाओं का प्रयोग भी किया है । शास्त्री जी मार्क्सवादी कवि होते हुये भी एक विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं । पर यहाँ हमें त्रिलोचन के काव्य – जगत में चतुर्दशपदी रूप के वस्तु – परीक्षण तक ही

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

अपने को सीमित रखकर उनका विवेचन – विश्लेषण अभीष्ट है ।

त्रिलोचन जी का कवि – कर्म एक दीर्घकाल का साक्षी रहा है । एक लम्बे अंतराल में प्रणीत इनकी इनकी चतुर्दशपदियों में हमें उनके रचनात्मक विकास के अनेक पड़ावों से साक्षात्कार होता है । त्रिलोचन जी के चतुर्दशपदी कवि – कर्म के प्रतिपाद्य पर अवधान केन्द्रित करने से पता चलता है कि उनका वर्ण्य – विषय व्यापकता एंव विविधता लिये हुये है । वर्ण्य – विषय के आधार पर हम उनकी चतुर्दशपदियों को अधोलिखित वर्गों में विभक्त कर सकते हैं ।

1. प्रेम भावना सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ ।
2. प्राकृतिक सौन्दर्य सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ ।
3. सामाजिक चेतना सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ ।
4. ग्रामीण जीवन की विविधता को चित्रित करने वाली चतुर्दशपदियाँ ।
5. व्यंग्यात्मक भाव की चतुर्दशपदियाँ ।
6. राजनीति सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ ।
7. आत्म – चित्रण प्रधान चतुर्दशपदियाँ ।
8. नागार्जुन के बारे में चतुर्दशपदियाँ ।
9. यथार्थवादी चतुर्दशपदियाँ ।

1. प्रेम भावन सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ :–

त्रिलोचन जी ने प्रेम – भावना का चित्रण अनेक कोणों से किया है । उनके प्रेम चित्रण को इन विविध कोणों के आधार पर निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है –

1. साहचर्य पर आधारित प्रेम ।
2. श्रम पर आधारित प्रेम ।
3. रूप और सौन्दर्य पर आधारित ।
4. गार्हस्थिक प्रेम ।
5. आत्मिक प्रेम

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

त्रिलोचन शास्त्री की आरम्भिक चतुर्दशपदियाँ प्रेम परक हैं । उनकी सबसे अधिक चतुर्दशपदियाँ प्रेम पर आधारित हैं । त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में अत्याधिक मात्रा में प्रेम की भावना निहित है । अन्य कवियों की प्रेम सम्बन्धी रचनाओं में जिस मानसिक वेदना, निराशा और विषाद के चित्र मिलते हैं, उनका त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में अंश मात्र भी उल्लेख नहीं हुआ है । त्रिलोचन की प्रेम – परक चतुर्दशपदियों में उनका अपना वैशिष्टय है ।

त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में अभिव्यंजित प्रेम हर प्रकार की रूढ़ि और रीति से मुक्त प्रेम में लय पैदा करता है, जगत को जीवन का प्रेमी बनाता है । प्रेम के बारे में उनकी दृष्टि एकदम साफ और स्पष्ट है, इस दृष्टिकोण में रोमांटिक कवियों जैसी चेतना है, परन्तु त्रिलोचन के यहाँ प्रेम कल्पना में नही यथार्थ के धरातल पर विकसित होता है । त्रिलोचन का यह प्रेम जीवन और जगत् से दूर एकांत में नहीं ले जाता है ।

"बदल गया हूँ इसी लिए मैं आज नवीने,
तट जैसे लहरों को पीकर बदल गया हो,
मधु ऋतु में दल – दल पीपल हो गया हो,
जैसे स्वप्न अपूर्व आ गये मन में जीने,
कण – कण अन्वेषण कर मैंने तुमको पाया,
क्षण – क्षण गीतों में तुम आई, मैंने गाया;[1] "

त्रिलोचन के नजदीक प्रेम शौक नहीं है, वह जीवन की अनिवार्यता है –

"हम तुम दोनों आज दूर हैं, चाहें भी तो
पास नहीं आ सकते, वैसे कहने को
कुछ भी कह लें, मन समझा लें, पर रहने को
साथ अजी छोड़ो भी, अपने मन की भी तो
सुननी पड़ती है, फिर बाधाएँ भी तो
एक – एक से बढ़कर हैं" .....[2]

---

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ – 11
2. अनकहनी भी कुछ कहनी है – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ – 74

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

इन प्रेम सम्बन्धी चतुर्दशपदियों में जीवन की लय में मानव मन की मुक्ति का राग मुखरित होता है । त्रिलोचन की दृष्टि में प्रेम की सफलता व्यक्ति का समाज में रागमय समर्पण करा देने में है ।

त्रिलोचन शास्त्री ने प्रेम के विभिन्न रथों पर चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं जो इस प्रकार से हैं –

1. साहचर्य पर आधारित प्रेम :–

त्रिलोचन ने प्रेम को विषय बनाकर प्रभूत चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं । परन्तु यह प्रेम न तो मात्र रूप लिप्सा पर ही आधारित है और न केवल ऐन्द्रिकता तथा अतृप्ति पर ही। त्रिलोचन के काव्य में हिन्दी में पहली बार सामाजिक प्रेम का चित्रण हुआ है, जिसमें प्रेम विलासिता और शारीरिक भूख से परिचालित न होकर साहचर्य पर आधारित है –

"धन की उतनी नहीं मुझे जन की परवा है
जितनी । जो मुझसे खुलकर मन से मिलता है
मैं उसका वशवर्ती हूँ । इसी से खिलता है
मेरे प्राणों का शतदल । एक ही दवा है
.....
जीवन के सौ रोगों की, चाहो तो ले लो
.....
अपनापन सब पर, पसार दे खलकर खेलो"[1]

इस प्रकार से त्रिलोचन के चतुर्दशपदी काव्य में साहचर्य पर आधारित प्रेम चित्रण के अकूत उदाहरण पदे – पदे देखे जा सकते हैं ।

2. श्रम पर आधारित प्रेम :–

त्रिलोचन जी का श्रम पर आधारित प्रेम असामयिक नहीं है । यह प्रेम का किसानी रूप है । प्रेम और श्रम की यह मिश्रित चेतना हिन्दी काव्य के लिये बिलकुल नई है । हास्यावादी कवि का प्रेम हवाई और काल्पनिक था । उसे बुलबुल वृक्ष

---

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 17

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

की डाली पर से ही यौवन का संगीत सुना देती थी परन्तु त्रिलोचन का प्रेम सहयोग की भूमि पर आधारित होकर श्रम – सम्बन्ध भावना से उत्पन्न होता है ।

"श्रम को फलीभूत करने में स्वयं निचोड़ी
अपनी रग – रग जिसने और पसीना ढाला,
क्षेत्र किया तैयार, भले ही खूब चिचोड़ी
चिताओं ने उसकी काया, पहले वाला
रह न जाय बल, इस से क्या"[1]

अथवा

"..... पथिकों के साथी
भूमि, वायु, नभ है, रवि – शशि न बंध तुड़ाए
ठहरा कौन, चली जब जब गर्मी की भाथी,
हम तुम समय नहीं मुहूर्त को देख चले थे,
पंखे लू के मारूत ने अविराम झले थे" [2]

3. <u>रूप और सौन्दर्य पर आधारित प्रेम :–</u>

त्रिलोचन शास्त्री की अधिकतर चतुर्दशपदियाँ प्रेम पर आधारित हैं, जिससे रूप और सौन्दर्य पर त्रिलोचन जी ने अधिक चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं । त्रिलोचन जी रूप और सौन्दर्य पर आधारित प्रेम परक चतुर्दशपदियों में उनका अपना वैशिष्टय है । रूप चित्रण में भी गति रखते हैं । एक उदाहरण दृष्टव्य है –

"देख रहा हूँ मैं तुम को मानव काया में
अपने से अभिन्न, लेकिन विश्वास न होता
तुम भी पृथ्वी की पुत्री हो, स्वर्ग न खोता
तुम को तो नभ की नीरव सुनील छाया में,"[3]

इस चतुर्दशपदी में कवि ने अपने काव्य सामर्थ्य का परिचय दिया है ।

---

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 89
2. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 67
3. अनकहनी भी कुछ कहनी है – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 12

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

4. गार्हस्थिक प्रेम :-

यह प्रेम कवि के जीवन में शक्ति और प्रेरणा बनकर आया है । यह असामाजिक या तथाकथित प्रेम नहीं है, बल्कि जीवन के उत्तरदायित्वों को वहन करने वाला गार्हस्थ प्रेम है जिसकी परम्परा हिन्दी में मिट सी गयी है ।

"सचमुच, इधर तुम्हारी याद तो नहीं आई,
झूठ क्या कहूँ । पूरे दिन मशीन पर खटना,
बासे पर आकर पड़ जाना और कमाई
का हिसाब जोड़ना, बराबर चित्त उचटना ।
इस उस पर मन दौड़ाना । फिर उठ कर रोटी
करना । कभी नमक से, कभी साग से खाना।"[1]

कवि ने गार्हस्थ जीवन को अत्याधिक मूल्यवान माना है ।

5. आत्मिक स्तर पर प्रेम :-

त्रिलोचन प्रेम को आत्मिक स्तर पर स्वीकार करते हैं । मात्र कृत्रिम प्रणयाभिनय त्रिलोचन जी को प्रिय नहीं है । वे प्रेम को मधुर युगल गीत की कड़ी समझते हैं ।

"याद तुम्हारी आई है, गम्भीर उदासी
पकड़ रही है मुझे, करूँ क्या , लाचारी है
जीवनकी कल्पना सत्य से जो हारी है
नया नहीं है, कौन वृत्ति थी मन में प्यासी'[2]

2. **प्राकृतिक सौन्दर्य सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ** :-

सौन्दर्य की चेतना जैसे कवि के हृदय पर स्थाई रूप से छा गयी है । उसने प्रकृति में एक सौन्दर्य अनुभव किया है । त्रिलोचन के काव्य में प्रकृति चित्रण - सम्बन्धी चतुदर्शपदियों की कमी नहीं है । इसे कवि ने प्रेरणा के रूप में ग्रहण किया है।

---

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 46
2. अनकहनी भी कुछ कहनी है – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 20

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

इन चतुदर्शपदियों में प्रकृति के अनेक रूपों और मुद्राओं का अंकन हुआ है ।

1. प्रकृति का निर्मल रूप ।
2. नये प्रभात पर आधारित ।
3. प्रकृति के रूप और प्रभाव पर आधारित ।
4. मौसम सम्बन्धी।
5. प्रकृति और मनुष्य ।

1. <u>प्रकृति का निर्मल रूप :-</u>

त्रिलोचन शास्त्री के हृदय पर सौन्दर्य की चेतना स्थाई रूप से छा गयी है । उन्होंने प्रकृति में एक सौन्दर्य अनुभव किया है । त्रिलोचन के काव्य में प्रकृति का निर्मल रूप भी देखने को मिलता है । जिसका एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है –

" ..... सकल नया है
साज सिंगार प्रकृति के तन पर अब उनया है
मेघों का दल श्याम नहीं खंजन आए हैं
दूर देश से नीड़ बनाने लगी बया है
पुरइन के पत्तों पर सरसिज मुस्काए हैं,
सर शोभित हैं और कुई के दिन आए हैं"[1]

जिस चतुर्दशपदीकार के हृदय में मानव के इस निर्मल रूप को पाने की चेतना होगी, वह उस रूप को सौन्दर्य और निर्मलता प्रदान करने के लिये न केवल सोचता रहेगा, बल्कि उसके लिये संघर्ष करेगा ।

2. <u>नये प्रभात पर आधारित :-</u>

नये प्रभात की किरणों से चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन का काव्य भरा पड़ा है । प्रभात चतुर्दशपदीकार को पुकारता है, कभी वह उसके पास आता है ।

"प्रातः हुआ, पास ही बैठा कोई कागा
रहता है, उस की इन ध्वनियों को प्रत्युत्तर

---

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है , पृष्ठ – 59

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

जरा दूर से देता है दूसरा न जागा

है संगीत – खगों में कोई मुर्ग का स्वर

नहीं सुन पडा है अब तक, पर–वाणी का वर"[1]

2. प्रकृति के रूप और प्रभाव पर आधारित :–

त्रिलोचन ने प्रकृति के रूप और प्रभाव दोनों का विशेष ध्यान रखा है, इसलिए उनकी प्राकृत्किसौन्दर्य प्रधान चतुर्दशपदियाँ कहीं भी अपने मानवीय संदर्भ से कटी नहीं हैं । ऐसी चतुर्दशपदियों में जातीय जीवन के प्राकृतिक परिवेश का बोध प्रकट होता है। उनकी प्रकृति सम्बन्धी चतुर्दशपदियों में रूप, रस, गन्ध और ध्वनि का संसार कितना समृद्ध है – यह तथ्य अधस्तनः अंकित उदाहरण से प्रदत्त है ।

"रजनी गंधा से वातावरण गमकता है

शीतल बयार ले कर विचार आई नव नव

यह दूरी, केवल स्थान की नहीं मन की है,

विह्वल अधीरता क्षण क्षण की कण कण की है" [2]

4. मौसम सम्बन्धी :–

त्रिलोचन शास्त्री के काव्य में मौसम सम्बन्धी चित्र भरे पड़े हैं ।

"झाँयें झाँयें करती दुपहरिया नाच रही थी

जलती हुई भार – सी गर्मी की पगडंडी

मुझे ले गई आमों की बारी में की

नहीं अधिक की आशा पाकर छाया ठंडी"[3]

प्रकृति का प्रयोग उनकी चतुर्दशपदियों में अलग अलग रूप में किया गया है –

"स्वागत है, स्वागत वसन्त प्रिय, आओ आओ

शिशिर काल के कुहरे पर जब चित्र सुनहले

---

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 75
2. उस जनपद का कवि हूँ, पृष्ठ 47
3. उस जनपद का कवि हूँ , पृष्ठ 57

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

रवि अपने कर से लिखता है, तब तुम पहले
विहगों को नूतन – स्वर दो, फिर मिल कर गाओ" [1]

"पीपल के पत्ते ने ज्यों मुँह खोला – खोला
त्यों चटाक से लगा तमाचा आकर लू का
झेल गया वह भी आखिर बच्चा था भू का"[2]

· त्रिलोचन के मुख्य विषय प्रकृति ही हैं ।

5. <u>प्रकृति और मनुष्य का आदिम सम्बन्ध :–</u>

त्रिलोचन के काव्य में गांव और शहर का द्वन्द है । किन्तु द्वन्द में मनुष्य और प्रकृति के बीच जैसे खून का रिश्ता है । इसलिये प्रकृति सम्बन्धी उनकी श्रेष्ठ चतुर्दशपदियाँ काशी की गंगा के इर्द–गिर्द ही लिखी गयी हैं ।

"देख रहा हूँ गंगा के उस पार धूल की
धारा बहती चली जा रही है, चढ़ – चढ़कर
वायु तरंगों पर अपने बल से बढ़ – बढ़कर
घूसर करती हुई क्षितिज को, वृक्ष – मूल की"[3]

इस चित्र में एक अनुभव है । ऐसा अनुभव जिसमें प्रकृति से मनुष्य अलग नहीं है ।

त्रिलोचन की प्रकृति सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ आभास देती हैं आदिम संवेदना का लेकिन चित्रों के मूल में दृष्टि है आधुनिक । यह दृष्टि प्रायः अपने आस पास के अतिपरिचित और साधारण दृश्यों पर टिकती है और रमती भी है ।

जीवन के प्रेमी त्रिलोचन प्रकृति में भी जीवन ही देखते हैं, बल्कि प्रकृति में उनकी दृष्टि वहीं जाती है जहाँ जीवन दिखता है ।

---

1. त्रिलोचन के बारे में – गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 224
   यह उद्धरण त्रिलोचन की कृति – "फूल नाम है एक" से है ।
2. वही ।
3. त्रिलोचन के बारे में – गोविन्द प्रसार, पृष्ठ 84
   यह उद्धरण त्रिलोचन के कृति – शब्द से है पृष्ठ 11

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

3. **सामाजिक चेतना सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ :–**

त्रिलोचन शास्त्री ने सामाजिक जीवन की अनेक विविधताओं को प्रस्तुत किया है जिनको हम इस प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं –

1. महानगरीय सभ्यता पर आधारित ।
2. मध्यवर्गीय परिवार पर आधारित ।
3. अकेलेपन पर आधारित ।
4. संघर्षजन्य चतुर्दशपदियाँ ।
5. जनशक्ति पर आधारित ।
6. अवसाद करूणा सम्बन्धी ।
7. अटूट – विजय भाव सम्बन्धी ।
8. शोषण सम्बन्धी ।
9. कर्मठता सम्बन्धी ।
10. वेदना सम्बन्धी ।

त्रिलोचन जी की चतुर्दशपदियाँ हमारे विराट सामाजिक जीवन के बहुल विविधताओं की चतुर्दशपदियाँ हैं । चतुर्दशपदीकार ने सामाजिक जीवन को सीधे और सपाट ढंग से अभिव्यक्त किया है । त्रिलोचन जी की चतुर्दशपदियों में सामाजिक घटनाओं का वर्णन बहुत कम है । मानव जीवन की दशाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति अधिक है । वे मानवीय अनुभवों और जीवन की विभिन्न दशाओं की अभिव्यक्ति करते हुये संघर्ष, आस्था, जिजीविषा, प्रेम, न्याय और स्वतंत्रता जैसे जीवन मूल्यों की व्यंजना करते हैं । त्रिलोचन के सॉनेट संग्रह "अरघान" में गनह सामाजिकता वाले महाकुंभ सम्बन्धी सॉनेट हैं –

"आदमियों की वह मद्देह, वह भीड़ ठसाठस,
उठती हुई गनगनाहट, आगे का रेला,
पीछे का दबाव, चारों ओर की कसाकस
आदमियों के सिर ही सिर, ऐसा था मेला।"[1]

---

1. अरघान – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ – 56

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

1. महानगरीय सभ्यता:-

छोटे शहर के चित्र को त्रिलोचन शास्त्री ने बडी कुशलता से कम से कम शब्दों में प्रस्तुत किया है ।

"सरसों छींटो भूमि तक न जाये वह ठेला -
ठेली थी, आँखें कुछ देख नहीं पाती थीं,
कान सुन नहीं पाते थे, मिट्टी का ढेला
ही मनुष्य था यदि साँसे बाहर जाती थीं।" [1]

2. मध्यवर्गीय परिवार :-

त्रिलोचन ने "दिगन्त" के सॉनेट में कलकत्ते के बंगाली परिवार के माध्यम से शहरी जीवन के मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण किया है कि वहाँ का गरीब और अभावमय जीवन कैसा है ।

साधारण जन के प्रति कवि के उत्कट प्रेम की अभिव्यक्ति उसकी अनुलिखित पंक्तियों से स्पष्ट है -

नये युग के उदगाता
वे हैं जो हैं निपट निरन्तर लेकिन जिनके
प्राणों की ललकार जानती कभी न रूकना,
जिनका आहत - मान जानता नेक न झुकना ।"[2]

3. अकेलापन :-

चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन समाज से विलग पल भर के लिए नहीं रह सकते । एकाकीपन कवि के लिए असह्य है ।

अकेलेपन की ऐसी समाज सापेक्ष बैचेनी कहीं - कहीं दिखाई नहीं देती - जैसी त्रिलोचन की इस चतुर्दशपदी में है -

"सचमुच इधर तुम्हारी याद तो नहीं आई,
झूठ क्याकहूँ । पूरे दिन मशीन पर खटना,

---

1. अरघान - त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ - 56
2. हंस - फरवरी 1952, पृष्ठ - 347

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

बासे पर आकर पड़ जाना और कमाई
का हिसाब जोड़ना, बराबर चित्त उचटना ।
इस उस पर मन दौड़ाना । फिर उठ कर रोटी
करना । कभी नमक से कभी साग से खाना ।" [1]

समस्त चतुर्दशपदियों का एक तिहाई से भी अधिक चतुर्दशपदी ऐसी हैं जिनमें अकेलेपन का अनुभव ही संलाप की लय में पर्यवासित हो कर आता है । त्रिलोचन की ज्यादातर चतुर्दशपदियों की मूल प्रकृति बातें करने जैसी है । अपने आप से संवाद करने जैसी है । अकेलेपन का भाव इस चतुर्दशपदी में है –

"अपना बस क्या, जीवन है दुनिया का सपना
जब तक आँखों में है तब तक ज्योति बना है,
अलग हुआ तो आँसू है या तिमिर घना है,
बने ठीकरा तो भी मिट्टी को है तपना ।"[2]

4. <u>संघर्ष जन्य चतुर्दशपदियाँ :–</u>

त्रिलोचन जीवन संघर्ष के अप्रतिम चतुर्दशपदीकार हैं । उनकी चतुर्दशपदियों में चित्रित संघर्ष उनका ही नहीं, बल्कि उस हिन्दी भाषी जाति का संघर्ष है । त्रिलोचन का मुख्य विषय संघर्षशील मनुष्य है । त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में संघर्षशील मानव की चिन्ता दुनिया में घटित होने वाली घटना भी है । त्रिलोचन का कवि आत्मकेन्द्रित नहीं है, वरन् सजग भी है । सजगता के भावातिरेक में वह चतुर्दशपदी की सीमाएँ लाघँकर युद्ध–भूमि में नहीं लड़ता, वह अपने कर्म के प्रति सचेत रहता है । एक चतुर्दशपदी का अंश –

"हिन्दी चीन की जय दीनों दलितों की जय है
इस जय में स्वतन्त्रता नये गान गाती है

---

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ – 46
2. दिगन्त – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ – 12

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

निर्भय मानव पँक्ति आज तैयार खड़ी है,

लाली फैल चली है, सम्मुख सूर्योदय है।" [1]

त्रिलोचन को देश की जनता पर विश्वास है कि वह परिवर्तन में क्रान्तिकारी भूमिका का निर्वाह करेगी । इसलिए उनकी चतुर्दशपदियों में दीन – हीन रूपों में आने वाला मनुष्य भी केवल संघर्ष में विश्वास रखता है ।

5. जनशक्ति :–

त्रिलोचन को जन शक्ति पर असीमित विश्वास है । वह जानता है कि जीवन कभी भी पराजित नहीं हो सकता, मौत कभी विजयी नहीं हो सकती । मृत्यु पर जीवन की विजय यह प्रकृति का अखण्ड विधान है ।

अन्तर्हित इच्छाएँ अभिव्यक्ति पाती थीं

काय – क्लेश में देखा जीवन रस लेता था,

देखा कोटि संख्य जनता सामने पड़ी है,

गंगा यमुना की धारा के साथ अड़ी है ।"[2]

6. अवसाद – करूणा :–

त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में महरे अवसाद की छाया है । उसमें दु:ख का प्रदर्शन नहीं है, न ही दर्शन है, अर्थात् वह सहानुभूति का भिखारी नहीं है । वह तो भीतर ही भीतर सब कुछ सहता है ।

"दुखों के बाणों के विद्ध हृदय जिसका हो

वह सुख को क्या समझ सकेगा, उसको सुख तो

एक कल्पना सारहीन है, दृग – सम्मुख तो

एक अपरिचित विश्व पड़ा है, वह किसका हो ।"[3]

एक अनाहत शब्द की गूँज उनके चतुर्दशपदी व्यक्तित्व में व्याप्त है । वह एक अनाहत स्वर है । वास्तव में त्रिलोचन क्रान्ति के चतुर्दशपदीकार नहीं हैं ।

---

1. त्रिलोचन के बारे में – गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 222
2. अरघान – त्रिलोचन शास्त्री , पृष्ठ – 40
3. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 18

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

वे गहरे अर्थों में करूणा के चतुर्दशपदीकार हैं क्योंकि उनकी चतुर्दशपदियों में दु:ख और अवसाद का अवसान करूणा में होता है, मायूसी में नहीं । अतः त्रिलोचन का चतुर्दशपदी काव्य करूणा आख्यान का काव्य है ।

त्रिलोचन के सॉनेट पढ़ते हुये कभी दुत्कार, प्रवंचना, अपमान, उपेक्षा, अभाव और उससे उपजा दर्द – सबसे एक गहरे दु:ख की कसक होती है । भीतर तक हिला देने वाला यह दु:ख जब अपने चरम रूप में अभिव्यक्त होता है तो वह करूणा का रूप ले लेता है ।

7. अटूट विजय भाव :–

त्रिलोचन शास्त्री को पराजय की कल्पना से भय लगता है, वह जय का प्रेमी है । उसे विश्वास है कि वह राह पा गया है ।

"प्रतिबिंबित होकर मानस में, मुझे भा गया
वह विराट् दर्शन, मैंने विश्वास पा लिया,
वह विश्वास जो विजय के नवगान गा गया,
गान के स्वरों से मैंने आकाश छा लिया।" [1]

8. शोषण :–

सामाजिक भाव – भूमि पर लिखी गई शास्त्री जी की चतुर्दशपदियों में सामाजिक विषमता के चित्र हैं । समाज में विषमता अशान्ति और संघर्ष का कारण पूँजीवादी सभ्यता है । यही सभ्यता शोषण को जन्म देती है । शोषण के कारण कलाएं निर्जीव हो जाती हैं । इसी कारण चतुर्दशपदीकार का सबसे बड़ा शत्रु पूँजीवाद है ।

समाज के पीड़ित शोषित – वर्ग विकट परिस्थितियों में रहते हुये भी आत्म सम्मान रखते हैं । चतुर्दशपदीकार ने इस प्रकार शोषित जनता के अक्षुण्ण गौरव की ओर ध्यान आकृष्ट किया है । अमानवीय दशाओं में भी रहते हुये अपने गौरव को बचाए रखना इस वर्ग की अपराजेय शक्ति का ही सबल प्रमाण प्रस्तुत करता है ।

---

1. अरघान – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 42

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

"महाकुम्भ" के सॉनेट भारतीय जीवन की उस संगठित संहारक शक्ति की जबर्दस्त भर्त्सना है, जो धर्म, शासन और सम्पत्ति के मेल से लगातार बढ़ती जा रही है । एक तरह से यह महाकुम्भ सिर्फ प्रयाग का ही महाकुम्भ नहीं, बल्कि पूरे भारत में चल रहे शोषण का महाकुम्भ है । त्रिलोचन ने जनता के विराट् स्वरूप से लेकर शोषण तन्त्र के सभी पेचों का उद्घाटन किया है । सभी महाकुम्भ – सॉनेटों की मुख्य चिन्ता यही है –

"कहीं सरलता भोलेपन में बची हुयी थी,
कहीं किसी को कोई जन ललकार रहा था,
कहीं किसी की कोठी धन से बची हुयी थी,
कहीं अभागा करमकटा झख मार रहा था ।" [1]

9. कर्मठता :–

जीवन के प्रति चतुर्दशपदीकार का दृष्टिकोण आशावादी है । वह कर्मठता में विश्वास करता है । बाधाओं से हार न मानकर पथ पर निरन्तर चलते रहता ही उसकी दृष्टि में जीवन का चरम लक्ष्य होना चाहिए ।

"आने दो, आने दो, जनता को मत रोको,
पर्वत की दुहिता है, कब रूकने वाली है,
पथ दो, प्याऊ बैठा दो, चलते मत टोको,
बल प्रयोग देख कर कब झुकने वाली है,
हार थकन से क्या यह धुन चुकने वाली है ।" [2]

10. वेदना :–

चतुर्दशपदीकार धरती की पीड़ा से व्याकुल हैं और उसके लिये हरा भरा देखने के लिये वह सवयं गल जाना चाहता है, मिट जाना चाहता है ।

अन्य समाजवादी कवियों की तरह त्रिलोचन जी ने ईश्वर तथा आध्यात्मिक विश्वासों की खिल्ली तो नहीं उड़ाई है कि प्राचीन विश्वासों से जकड़ी जनता को देखकर

---

1. अरघान – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 41
2. अरघान – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 43

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

उन्हें वेदना होती है । इसका एक उदाहरण यहाँ पर देखा जा सकता है –

"भीषण कमी अन्न की, बलात्कार की अनुदिन
बढ़ने वाली गाथाएँ, हत्याएँ, डाके,
चोरी, रिश्वतखोरी, कोई बुरा न ताके
रामराज्य है, रामराज्य ही बढ़ती के दिन ।"[1]

4. ग्रामीण जीवन की विविधता को चित्रित करने वाली चतुर्दशपदियाँ :–

त्रिलोचन की चतुर्दशपदयिों में ग्रामीण जीवन के अद्‌भुत चित्र हैं । उसमें गांव की जिन्दगी की वास्तविकताएं और आकांक्षाएँ हैं । जन जीवन के चित्र हैं, और गांव की बोली, भाषा मुहावरे आदि हैं । त्रिलोचन शास्त्री की ग्रामीण जीवन की विविधता को चित्रित करने वाली चतुर्दशपदियों को निम्न भागों में बांटा जा सकता है जो इस प्रकार से हैं –

1. मार्मिक प्रसंग सम्बन्धी ।
2. अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता पर आधारित ।
3. भारतीय जन पर आधारित ।
4. अल्हड़ मस्ती सम्बन्धी ।
5. किसानी जीवन पर आधारित ।
6. मध्यवर्गीय स्त्रियों पर आधारित ।
7. मध्यवर्गीय परिवारों पर आधारित ।
8. फसलों पर आधारित ।
9. त्रिलोचन की काशी ।

1. <u>मार्मिक प्रसंग :–</u>

मार्मिक प्रसंग त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों के आधार भाव हैं । बात के मर्म को सहजता से छूना और सांस्कृतिक उन्नयन के साथ प्रस्तुत करना त्रिलोचन की ऐसी विशेषता है जो आधुनिकता का ढ़ोल पीटने वालों में न मिलेगी ।

---

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 37

Maulana Azad Library, Aligrh Muslim University

त्रिलोचन की चतुर्दशपदी की वस्तुगत नवीनता इस बात में होती है कि मार्मिकता की पहचान उन स्थितियों में करते हैं जिसमें मार्मिकता पहले नहीं ढूँढी जाती थी । मार्मिकता जीवन का ही एक रूप है । वह जीवन से अलग कोई ऐसी वस्तु नहीं जो असहज या असामान्य हो – मार्मिकता सहजता है, विचलन नहीं ।

"बुढ़िया जब मर गई उसे ले जाकर फैंका
अंधे कुएँ में चमारों ने, थोड़ी लकड़ी
नहीं किसी ने दी उस को, वह रास्ता छेंका
लड़कों का परेत के भय ने छकड़ा छकड़ी
आया जाया करते थे, हो गए महीनों,
सुना कि बुढ़िया है अब तक जैसी की तैसी
पड़ कुएँ में ..... "[1]

त्रिलोचन के सभी संग्रहों में इसी प्रकार के मार्मिक प्रंसग हैं ।

2. <u>अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता :–</u>

त्रिलोचन शास्त्री की महाकुम्भ पर लिखी गयी चतुर्दशपदियाँ भारतीय जन के चरित्र का दूसरा पक्ष प्रस्तुत करती हैं – अन्धविश्वासी और रूढ़िवादी ।

अन्धविश्वास साधारण जन का ही क्यों न हो, त्रिलोचन के चाबुक से वह बच नहीं सकता । "दिगन्त" का एक सॉनेट है "मूर्तिपूजा" । वाराहावतार की प्रतिमा औड़िहार में आये हुये ग्रामीण नत हुए, लेकिन पता नहीं कि कौन देवता हैं ये ।

महाकुम्भ की चतुर्दशपदी में भारतीय जन का अन्धविश्वास –

"भूले हुये चले आते हैं, पथ पर बीनों
को छेड़ कर गा रहे हैं, बिसरी लाचारी
धर्म न होता तो वह दुनिया कैसे होती,
पुण्य न होता तो प्रवृत्ति क्या ऐसे होती ।"[2]

---

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 96
2. अरघान – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 52

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

3. भारतीय जन :–

भारत के जीवन की एक झाँकी और भारतीय चरित्र की एक पहचान त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में मिलती है । भारतीय जन अधिकांश उस ग्रामीण समाज का सच है, जहाँ दो पैसे का हिल्ला ढूँढने के लिए आदमी अपने बाल बच्चों से दूर आ जाता है ।

"सचमुच, इधर तुम्हारी याद तो नहीं आई,
झूठ क्या कहूँ। पूरे दिन मशीन पर खटना,
बासे पर आकर पड़ जाना और कमाई
का हिसाब जोड़ना, बराबर चित्त उचटना ।" [1]

4. अल्हड मस्ती :–

त्रिलोचन शास्त्री की चतुर्दशपदियाँ आत्मव्यंजक हैं । लेकिन उनके बीच झाँकता हुआ व्यक्तित्व दर्द का ही नहीं, स्वाभिमान और अल्हड मस्ती का भी है ।

जिस समृद्ध और सुखी जिन्दगी की चाह कवि को है वह उसे अभी तक नहीं मिली ।

5. किसानी जीवन :–

त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में निम्नमध्यवर्गीय किसान व्याप्त है । किसान संस्कार से संकोची होता है । त्रिलोचन ने विभिन्न ऋतुओं में बदलते किसान जीवन का वर्णन किया है । उन्हें वर्षा और वसन्त ऋतु विशेष प्रिय है । वे किसान जीवन के वास्तविक सुख – दुःख, आशा–निराशा और संघर्षों की चतुर्दशपदियाँ लिखते हैं, काल्पनिक उल्लास और विजय की नहीं । वे किसान जीवन की करूण कहानी कहते हैं । उनका किसान अभाव में जीता है, लेकिन अभाव से दबता नहीं । उनकी चतुर्दशपदी में किसान – जीवन का यथार्थ सच्चे और खरे रूप में है, न वह भावुकता के उच्छ्वास में डूबा है, न विचारधारा के आग्रह से ढका है ।

त्रिलोचन ऐसे चतुर्दशपदीकार नहीं हैं । उनकी दृष्टि एक सजग किसान की दृष्टि है जो उस किसान को जीते , देखते, सुनते और समझते हुये चतुर्दशपदीकार

---

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 46

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

को मिली है, इसलिए उसमें मध्यवर्गीय तटस्थता और भावुकता नहीं है । उसमें किसान जीवन से आत्मीयता और तादात्म्य है, लेकिन उस जीवन में मौजूद रूढ़ियों की आलोचना भी है । उनकी दृष्टि किसान – जीवन की समग्रता को देखती है। उनकी चतुर्दशपदी में किसान – जीवन के विभिन्न पक्षों के चित्र हैं ।

त्रिलोचन न कोरी किसान चेतना के चतुर्दशपदीकार हैं और न इतने अधिक आनुधिक ही । त्रिलोचन किसी पिछडे किसान की अपेक्षा आधुनिक समाज के झुलसे हुये मनुष्य के चतुर्दशपदीकार हैं –

"मुझ को हरियाली पसन्द है, खुल कर खिलना
फूलों का मुझ को भी आह्लादित करता है
किन्तु चाहने भर से ही वांछित का मिलना
सहज नहीं है, इसके लिये टेक धरता है ।
जो वह आँधी, झंझा, ओलों से कब भागा,"[1]

6. <u>मध्यवर्गीय स्त्रियाँ :–</u>

त्रिलोचन की चतुर्दशपदी में गरीबी, शोषण और उत्पीड़न के शिकार किसान हैं । उनकी चतुर्दशपदी में सबसे अधिक खेतीहर मजदूर आते हैं और उन खेतीहर मजदूरों में भी स्त्रियों की जीवन – दशा पर उनका ध्यान अधिक जाता है । उनकी चतुर्दशपदियों में कुछ चरित्र हैं वे सब ग्रामीण, कारीगर, खेत–मजदूर और स्त्रियाँ हैं ।

7. <u>मध्यवर्गीय परिवार :–</u>

त्रिलोचन जिस जनपद के कवि हैं वहाँ के गरीब किसान और खेत–मजदूर आर्थिक तंगी के दिनों में किसी बड़े शहर में जाकर मजदूरी करते हैं । गांव में पत्नी अकेली रह जाती है । परायापन की प्रक्रिया में पड़े मजदूर की भौतिक और मानसिक स्थितियों की ऐसी अभिव्यक्ति हिन्दी के किसी दूसरे चतुर्दशपदीकार ने की है ? किसानों मजदूरों की जिन्दगी की त्रासद स्थितियों को गहराई से महसूस करने वाला

---

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 63

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

चतुर्दशपदीकार ही ऐसी परायेपन की स्थिति का वर्णन कर सकता है । त्रिलोचन शास्त्री ने मध्यवर्गीय परिवार की स्थिति का वर्णन बड़ी कुशलता से किया है –

"सचमुच , इधर तुम्हारी याद तो नहीं आई,
झूठ क्या कहूँ । पूरे दिन मशीन पर खटना,
बासे पर आकर पड़ जाना और कमाई
का हिसाब जोड़ना, बराबर चित्त उचटना ।" [1]

8. फसलों पर आधारित :–

त्रिलोचन शास्त्री ने फसलों पर अनेक चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं –

"गेहूँ जौ के ऊपर सरसों की रंगीनी
छाई है पछुआ आ आ कर इसे झुलाती
है, तेल से बसी लहरें कुछ भीनी भीनी
नाक में समा जाती हैं, सप्रेम बुलाती
है मानो यह झुक झुककर समीप ही लेटी
मटर खिलखिलाती है, फुल भरा आंचल है ।"[2]

चतुर्दशपदीकार त्रिलोचन को ग्रामीण जीवन के साथ वहाँ के मौसम, पेड़, पक्षी, फसलें, खेत – खलियानों की जानकारी है । पलाश, वैजयन्ती, कचनार, आम, चिलबिल यहाँ एक सजीव उपस्थिति बनाते हैं ।

9. त्रिलोचन की काशी :–

त्रिलोचन ने काशी पर अनेक चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं । आरम्भिक दिनों यानी सन् 1951 की लिखी एक चतुर्दशपदी –

काशी मुझे गांव सी लगती है, शहराती
हवा यहाँ कम से कम है। सब आसपास से
घुले – मिले रहते हैं। अपना रंग दिखाती
प्रकृति मनुष्यों में है, धरती से आकास से ।" [3]

---

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 46
2. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 62
3. अनकहनी भी कुछ कहनी है – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 71

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

यही काशी आज का सच भले ही न हो, लेकिन त्रिलोचन की काशी यही है । काशी त्रिलोचन के लिये वैसी ही थी जैसे गांधी जी के लिये भारत का गांव । चतुर्दशपदी की दुनिया में त्रिलोचन के लिये काशी का बहुत कुछ यही महत्व है ।

5. व्यंग्यात्मक भाव की चतुर्दशपदियाँ :–

त्रिलोचन ने अन्य प्रगतिवादी कवियों की भांति व्यंग्य की चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं । समाज की दुर्बलताओं पर कवि ने प्रहार व्यंग्य के माध्यम से ही किया है । विश्व–जीवन के व्यापक क्षेत्रों में व्याप्त अराजकता, अकर्मण्यता, गंदी राजनीति, ह्रासशील जीवन मूल्य, राजकीय अधिकारी, धार्मिक रूढ़ियाँ और पाश्चात्य कृत्रिम संस्कृति से प्रभावित व्यक्ति पर किये गये सशक्त व्यंग्य "गुलाब और बुलबुल" में देखने को मिलते हैं । हिन्दी कविता में व्यंग्य की कई दिशाएं रही हैं । एक दिशा सामन्ती दृष्टिकोण की है जिसमें आधुनिक जीवन के हर विकास की खिल्ली उडाई जाती है जिसमें विशेष रूप से नारी स्वतंत्रता की । दूसरे प्रकार का व्यंग्य यह है जिसमें अहंवादी दृष्टिकोण रहता है और व्यंग्य का निशाना बनता है । रूस, चीन साम्यवाद और स्वयं अपने देश की जनता के महान प्रयासों पर मीन – मेख करते रहना ही उनका काम है । ऐसा व्यंग्य अवसरवाद और अराजकतावाद से प्रेरित होता है ।

व्यंग्य के ये दोनों दृष्टिकोण हानिकारक हैं । त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों के व्यंग्य में विद्रूप की जगह संयम और गहरी चोट करने की जगह नोक चुभाने की प्रवृत्ति है ।

1. "कंटकाकीर्ण और संकट का,
   मार्ग जगती में ताज का ही है
   जीते हैं आज हम त्रिलोचन यह
   बल रगों में अनाज का ही है ।"[1]

2. "सड़ी व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह के लिये
   मैं ललकार रहा हूँ उस सोई जनता को

---

1. गुलाब और बुलबुल – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 79

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

जिसको नेता लूट रहे हैं, कह कर ताको

मत, हम तो हैं ही, अत्यधिक विमोह के लिए ।" [1]

त्रिलोचन का व्यंग्य गहरी पीड़ा से उठने वाला व्यंग्य है, जो कहीं तो कबीर का तेवर लेकर उभरता है और कहीं गालिब का । यह व्यंग्य अपने आप पर चोट करता हुआ शुरू होता है, पर वह आत्म दैन्य से नहीं आत्म विश्वास से पैदा होता है और जो हजार अभावों के बीच भी आदमी को सम्भाले रहता है और आगे बढ़ने का साहस देता है । त्रिलोचन कहते हैं –

सॉनेट सॉनेट सॉनेट सॉनेट क्या कर डाला

यह उसने भी अजब तमाशा । मन की माला

गले डाल ली । .....

यह तो चीज किराये की है

..... उसने नई चीज क्या दी है

सॉनेट से उसने मजाक भी खूब किया है

जहाँ तहाँ कुछ रंग – व्यंग्य का छिडक दिया है।"[2]

कई बार व्यंग्य मखौल उड़ाने के अंदाज में भी प्रकट होता है । कई बार तो त्रिलोचन ने अपने मित्रों पर भी व्यंग्य किया है, कवियों पर विशेष रूप से हिन्दी के आलोचकों पर । व्यंग्य के पीछे किसी तरह के दम्भ का अहसास नही है ।

6. राजनीति चेतना सम्बन्धित चतुर्दशपदियाँ :–

त्रिलोचन की चतुर्दशपदियों में राजनीतिक घटनाओं का वर्णन बहुत कम है, मानव जीवन की दशाओं और अनुभवों की अभिव्यक्ति अधिक है । वे मानवीय अनुभवों और जीवन दशाओं की अभिव्यक्ति करते हुये संघर्ष आस्था, जिजीविषा, प्रेम न्याय और स्वतंत्रता जैसे जीवन मूल्यों की व्यंजना करते हैं । त्रिलोचन के संग्रह "अरघान" में गहन राजनीतिकता वाले महा कुम्भ सम्बन्धी सॉनेट हैं ।

---

1. अनकहनी भी कुछ कहनी है – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 87
2. त्रिलोचन के बारे में – गाविन्द प्रसाद, पृष्ठ 143

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

"चमत्कार है दावत होने पर दुर्घटना
नेताओं को ज्ञात हुई , फिर कारें दौड़ी
दौड़ी इधर से उधर पहुँची, यो ही खटना
पड़ता है अवसर पर, सजी सजाई चौड़ी
सड़क दहल सी उठी, भीड़ थी मानो गौड़ी ।"[1]

7. **आत्म चित्रण प्रधान चतुर्दशपदियाँ :–**

त्रिलोचन शास्त्री की कुछ चतुर्शपदियाँ स्वयं ऐसी हैं जिनका मुख्य पात्र स्वयं त्रिलोचन है । इसमें त्रिलोचन नाम का उपयोग है, इसमें त्रिलोचन ने अपने आप को प्रस्तुत किया है, खुद की खाकाकशी की है, जो देखने वाली है –

"वही त्रिलोचन है, वह – जिसके तन पर गंदे
कपड़े हैं । कपड़े भी कैसे – फटे लटे हैं,
.....
कौन कह सकेगा इसका यह जीवन चन्दे
पर अवलम्बित है । चलना तो देखो इसका
उठा हुआ सिर, चौड़ी छाती लम्बी बाहें,
सधे कदम, तेजी, वे टेढी–मेढी राहें
मानो डर से सिकुड़ रही हैं ।"[2]

इस चतुर्दशपदी के वर्ण्य – विषय वे आप ही हैं। मानो सेल्फ पोर्ट्रेट है। सेल्फ पोर्ट्रेट की यह परम्परा पेंटरों में तो बहुत मिलती है लेकिन कवियों में कम । आत्म कथात्मक चतुर्दशपदियाँ तो मिल जायेंगी लेकिन आत्म का यह "लाइव – स्कैच" कम मिलेगा । इसका एक और उदाहरण –

"भीख मांगते उसी त्रिलोचन को देखा कल
जिसको समझे था है तो है यह फौलादी ।
.....

---

1. अरघान – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 59
2. उस जनपद काकवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 13

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

स्वाभिमान ज्योतिष्क लोचनों में उतरा था,
यह मनुष्य था, इतने पर भी नहीं मरा था ।" [1]

यह सभी सॉनेट जैसे बायोग्रैफिकल नोट्स के संकेत हों ।

8. **नागार्जुन के बारे में चतुदर्शपदियाँ** :–

त्रिलोचन शास्त्री ने "फूल नाम है एक" नामक चतुर्दशपदी संग्रह में नागार्जुन पर भी चतुर्दशपदियाँ लिखी हैं, जिसके माध्यम से त्रिलोचन शास्त्री ने नागार्जुन का नखशिख – वर्णन किया है । उनके स्वभाव, रहन – सहन, सामाजिक चिन्ता पर यह सॉनेट लिखे गये हैं । नागार्जुन त्रिलोचन के प्रिय कवि हैं । नागार्जुन पर लिखे गये सॉनेट इस बात को प्रमाणित करते हैं –

"कहा एक महिला ने, नागार्जुन तो कवि – से
नहीं जान पड़ते । आए तो ज्यों ही आए
त्यों ही घुल – मिल गए । ढंग ऐसे कब पाए
थे हमने कवियों के ।

एक मजूर ने कहा नागार्जुन ने मेरे
बच्चे को बहलाया, फिर रोटी बनाई
खाई और खिलाई । खुशियाँ साथ मनाईं
गम आया तो आए । टीह टाह की ।" [2]

इसके अतिरिक्त वे नागार्जुन के जुझारू व्यक्तित्व से भी परिचित कराते हैं–

"अत्याचार अनय पर नागार्जुन का कोड़ा
चूका कभी नहीं, कोड़ा है वह कविता का
कहीं किसी ने जान – बूझकर अनमल ताका
अगर किसी का तो कवि ने कब उसको छोड़ा ।"[3]

9. **यथार्थवादिता सम्बन्धी चतुर्दशपदियाँ** :–

त्रिलोचन का यथार्थवाद दूसरे चतुर्दशपदीकारों के यथार्थवाद से कुछ अलग है । उसमें न कहीं भावुकता है, न झूठा आशावाद, न काल्पनिक संघर्षों के

---

1. उस जनपद का कवि हूँ – त्रिलोचन शास्त्री, पृष्ठ 13
2. त्रिलोचन के बारे में – गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 226
3. त्रिलोचन के बारे में – गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 226

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University

अमूर्त चित्र, न मारो – मारो, काटो – काटो की ललकार है । वहाँ जन शक्ति में आस्था है, संघर्ष के लिये आह्वान है, मुक्ति आन्दोलन में गति भी है, लेकिन यह चेतावनी है कि सोच समझकर चलना होगा ।

"भाव उन्हीं का सबका है जो थे अभावमय
पर अभाव से दबे नहीं, जागे स्वभावमय ।"[1]

त्रिलोचन ने सॉनेटों में ठेठ भारतीय जीवन की एक दशा सामने रखी है – बिलकुल मूर्त रूप में । कहीं भी यथार्थ के वास्तविक स्वरूप को अन्य साधनों से बदला नहीं गया – जो है, जैसा है, वैसा ही ।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि त्रिलोचन शास्त्री केवल एक ही वर्ण्य – विषय तक सीमित नहीं रह गये हैं, उनका वर्ण्य – विषय का क्षेत्र बहुत अधिक विस्तृत और विशाल है । पूरे त्रिलोचन शास्त्री को पढते हुये सहसा यह लगता है कि उनकी चतुर्दशपदियों में ठेठ भारतीय चरित्र की एक पहचान मिलती है ।

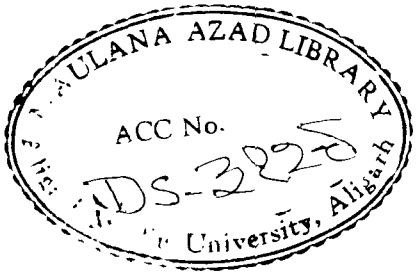

---

1. त्रिलोचन के बारे में गोविन्द प्रसाद, पृष्ठ 149

Maulana Azad Library, Aligarh Muslim University